साप्ताहिक
Live not just breaTHE

दि कार्मिक पोस्ट

MPHIN/2015/63220
MP/IDC1528/22-23

Global School Of Excellence, Obedullaganj

Email- thekaarmiicpost@gmail.com

वर्ष : 12, अंक : 20 (प्रति बुधवार), इन्दौर, 13 मई 2026 से 19 मई 2026 पेज : 8 कीमत : 3 रुपये

कब समझेंगें कटते पेड़ों का महत्त्व- भारत सहित दुनिया में अर्बन हीट आइलैंड का असर आधा कर रहे पेड़

नई दिल्ली। शहरों में कटते पेड़ों की कीमत अब सिर्फ हरियाली के नुकसान से नहीं, बल्कि बढ़ती जानलेवा गर्मी से चुकानी पड़ रही है। नए अध्ययन ने दिखाया है कि दुनिया के 8,919 बड़े शहरी क्षेत्रों, जहां 360 करोड़ लोग रहते हैं, में पेड़ अर्बन हीट आइलैंड के असर से पैदा होने वाली अतिरिक्त गर्मी को औसतन 48.6 फीसदी तक कम कर रहे हैं।

यानी जिन शहरों को कंक्रीट, डामर और इमारतें तपा रही हैं, वहां पेड़ अब भी जीवन बचाने वाली प्राकृतिक ढाल बने हुए हैं। अध्ययन के मुताबिक, पेड़ों की छाया और पत्तियों से निकलने वाली नमी शहरों का तापमान औसतन 0.15 डिग्री सेल्सियस तक घटा रही है। यदि ये पेड़ न हों, तो दुनिया के शहर औसतन 0.31 डिग्री सेल्सियस और ज्यादा गर्म हो सकते हैं। करीब 91.4 करोड़ लोगों को कम से कम 0.25 डिग्री सेल्सियस और 20.3 करोड़ लोगों को 0.5 डिग्री सेल्सियस से ज्यादा राहत मिल रही है। लेकिन सबसे बड़ा सवाल यही है, जहां गर्मी सबसे ज्यादा है, वहां पेड़ सबसे कम क्यों हैं? अध्ययन बताता है कि गरीब और घनी आबादी वाले शहरों में हरियाली बेहद कम है, जबकि अमीर देशों के शहर ज्यादा छांव में हैं। यही असमानता आने वाले वर्षों में भारत जैसे देशों के शहरों को हीट हॉटस्पॉट बना सकती है। वैज्ञानिकों की चेतावनी साफ है- पेड़ सिर्फ सुंदरता नहीं, तेजी से गर्म होती दुनिया में शहरों का जीवन-रक्षक बुनियादी ढांचा हैं। कंक्रीट, डामर और ऊंची इमारतों से घिरे शहर साल-दर-साल पहले से ज्यादा गर्म होते जा रहे हैं। लेकिन इस बढ़ती तपिश के बीच पेड़ अब भी लोगों के लिए राहत की सबसे बड़ी ढाल बने हुए हैं। एक नए अध्ययन में सामने आया है कि वैश्विक स्तर पर पेड़ शहरों में अर्बन हीट आइलैंड यानी शहरी गर्मी के प्रभाव को करीब आधा कम कर रहे हैं। हालांकि चिंता की बात है कि पेड़ों से मिलने वाली यह राहत दुनिया में हर जगह समान नहीं है। सबसे ज्यादा गर्म और आर्थिक रूप से कमजोर शहरों में, जहां लोगों को ठंडक की सबसे ज्यादा जरूरत है, वहां पेड़ों की कमी के चलते फायदे बेहद सीमित हैं। बता दें कि अर्बन हीट आइलैंड वह स्थिति है, जब शहरों की सड़कों, छतों और कंक्रीट की सतहों में गर्मी जमा हो जाती है और शहर आसपास के ग्रामीण इलाकों की तुलना में कहीं ज्यादा गर्म महसूस होने लगते हैं। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि शहरों में सड़कें, कंक्रीट, इमारतें और डामर जैसी सतहें दिनभर सूरज की गर्मी सोख लेती हैं और फिर धीरे-धीरे उसे छोड़ती रहती हैं। साथ ही पेड़ों और हरियाली की कमी, वाहनों का धुआं, एसी और उद्योगों से निकलने वाली गर्मी भी तापमान को बढ़ाती है। यह अध्ययन हम्बोल्ट यूनिवर्सिटी (जर्मनी), पैसिफिक नॉर्थवेस्ट नेशनल लेबोरेटरी (अमेरिका), द नेचर कन्जर्वेसी, वेस्टर्न सिडनी यूनिवर्सिटी सहित अन्य संस्थानों से जुड़े शोधकर्ताओं द्वारा किया गया है, जिसके नतीजे अंतराष्ट्रीय जर्नल नेचर कम्युनिकेशन्स में प्रकाशित हुए हैं। अपने इस अध्ययन में शोधकर्ताओं ने दुनिया के 8,919 बड़े शहरी क्षेत्रों का विश्लेषण किया है, जोकि 360 करोड़ लोगों का घर हैं। इस दौरान वैज्ञानिकों ने शहरों को छोटे-छोटे हिस्सों में बांटकर तापमान को मापा, ताकि यह पता चल सके कि किन इलाकों में पेड़ वास्तव में लोगों को राहत पहुंचा रहे हैं। अध्ययन के मुताबिक शहरों में मौजूद पेड़ अर्बन हीट आइलैंड प्रभाव से पैदा होने वाली अतिरिक्त गर्मी को 48.6 फीसदी तक कम कर रहे हैं। दुनिया के सभी शहरों का औसत देखें तो पेड़ों की छाया और पत्तियों से पैदा होने वाली नमी तापमान को औसतन 0.15 डिग्री सेल्सियस तक कम कर रही है। वहीं कुछ शहरों में यह असर और भी ज्यादा रहा, जहां तापमान में 2.7 डिग्री सेल्सियस तक की कमी दर्ज की गई।

AI टूल्स पर्यावरण रिसर्च की क्षमता में ला रहे हैं क्रांति

मुंबई। नई तकनीक की मदद से वैज्ञानिक हवा, पानी, मिट्टी और कचरे से जुड़ा डाटा तेजी से समझ पा रहे हैं। मशीन लर्निंग और डीप लर्निंग जैसे सिस्टम छिपे पैटर्न पहचानकर संभावित खतरों का पहले से अंदाजा लगा रहे हैं। इससे प्रदूषण और पर्यावरण से जुड़ी समस्याओं को जल्दी पकड़ना आसान हुआ है। AI की मदद से समय रहते सही कदम उठाने में काफी सहायता मिल रही है। अगर प्रदूषण का स्तर बढ़ता है, तो सिस्टम पहले ही चेतावनी दे देता है। इससे नुकसान कम करने के लिए जल्दी कार्रवाई हो सकती है। ऐसे टूल पर्यावरण सुरक्षा को पहले से ज्यादा मजबूत बना रहे हैं। ये सिस्टम तेल रिसाव, जंगलों की कटाई और जमीन के उपयोग में बदलाव जैसी चीजें पहचान सकते हैं। बड़ी मात्रा में डाटा का विश्लेषण करके दूर-दराज के इलाकों की जानकारी भी आसानी से जुटाई जा रही है। वैज्ञानिकों का कहना है कि इससे इंसानी गतिविधियों का पर्यावरण पर असर समझने और सही रणनीति बनाने में काफी मदद मिल रही है। इसमें सैटेलाइट डेटा का विशाल संग्रह मौजूद है, जिससे जंगलों की कटाई और शहरों के फैलाव पर नजर रखी जाती है। यह सिस्टम रियल टाइम में डाटा प्रोसेस करके रिसर्चरों को तुरंत जानकारी देता है।

जीवन के लिए अहम- 98 प्रतिशत ऑक्सीजन और 80 प्रतिशत भोजन प्रदान करते हैं पौधे

मुंबई। अंतरराष्ट्रीय वनस्पति स्वास्थ्य दिवसः खाद्य सुरक्षा और पोषण के लिए वनस्पति जैव सुरक्षा जरूरी, पौधों की रक्षा से ही सुनिश्चित होगा सुरक्षित भोजन, पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास जलवायु परिवर्तन और बढ़ता अंतरराष्ट्रीय व्यापार हानिकारक कीटों और रोगों के प्रसार को तेज कर रहे हैं, जिससे कृषि सुरक्षा खतरे में है। ए अत्यंत आवश्यक है।

हर साल 40 प्रतिशत फसलें कीट और रोगों से नष्ट होती हैं, जिससे खाद्य संकट और किसानों की आय पर गंभीर असर पड़ता है। पौधों की बीमारियों और कीटों से वैश्विक अर्थव्यवस्था को अरबों डॉलर का नुकसान होता है, जिससे कृषि और व्यापार दोनों प्रभावित होते हैं। जलवायु परिवर्तन और बढ़ता अंतरराष्ट्रीय व्यापार हानिकारक कीटों और रोगों के प्रसार को तेज कर रहे हैं, जिससे कृषि सुरक्षा खतरे में है। वनस्पति जैव सुरक्षा से फसलों की रक्षा, खाद्य आपूर्ति स्थिरता, पर्यावरण संरक्षण और सतत कृषि विकास सुनिश्चित किया जा सकता है। दुनिया भर में हर साल 12 मई को अंतरराष्ट्रीय वनस्पति स्वास्थ्य दिवस मनाया जाता है। इस दिवस का उद्देश्य लोगों को पौधों के महत्व और उनकी सुरक्षा के प्रति जागरूक करना है। संयुक्त राष्ट्र ने इस दिन को इसलिए घोषित किया ताकि दुनिया को यह समझाया जा सके कि स्वस्थ पौधे ही सुरक्षित जीवन, बेहतर भोजन और स्वच्छ पर्यावरण का आधार हैं। इस साल की थीम खाद्य सुरक्षा और पोषण के लिए वनस्पति जैव सुरक्ष रखा गया है। इसका उद्देश्य लोगों को यह समझाना है कि पौधों की सुरक्षा केवल खेती तक सीमित नहीं है, बल्कि यह भोजन, स्वास्थ्य, पर्यावरण और अर्थव्यवस्था से भी जुड़ी हुई है। धरती पर जीवन को बनाए रखने में पौधों की सबसे बड़ी भूमिका है। खाद्य एवं कृषि संगठन (एफएओ) के अनुसार, हम जो ऑक्सीजन सांस के रूप में लेते हैं, उसका लगभग 98 प्रतिशत पौधों से मिलता है। इसके अलावा दुनिया के करीब 80 प्रतिशत भोजन का स्रोत भी पौधे ही हैं। फल, सब्जियां, अनाज और दालें सभी पौधों से प्राप्त होती हैं। इसलिए पौधों की सुरक्षा सीधे मानव जीवन से जुड़ी हुई है। लेकिन आज पौधे कई तरह की बीमारियों और कीटों के खतरे का सामना कर रहे हैं। हर साल दुनिया की लगभग 40 प्रतिशत फसलें कीट और रोगों के कारण नष्ट हो जाती हैं। इससे किसानों को भारी नुकसान होता है और खाद्य संकट भी बढ़ता है। एफएओ के मुताबिक, पौधों की बीमारियों से विश्व अर्थव्यवस्था को हर साल 220 अरब डॉलर से अधिक का नुकसान होता है। वहीं हानिकारक कीटों के कारण करीब 70 अरब डॉलर का नुकसान होता है। इन समस्याओं का असर केवल खेती तक सीमित नहीं रहता, बल्कि इसका प्रभाव व्यापार, रोजगार और आम लोगों की जिंदगी पर भी पड़ता है। कृषि पर निर्भर देशों के लिए यह समस्या और भी गंभीर है। यदि फसलें सुरक्षित नहीं रहेंगी तो खाद्यान्न की कमी बढ़ेगी और गरीबी में भी इजाफा होगा। जलवायु परिवर्तन भी पौधों के लिए बड़ा खतरा बनता जा रहा है। बढ़ता तापमान और मौसम में बदलाव नए प्रकार के कीटों और बीमारियों को जन्म दे रहे हैं। इसके अलावा अंतरराष्ट्रीय व्यापार और यात्रा में तेजी आने से भी एक देश से दूसरे देश तक रोग और कीट तेजी से फैल रहे हैं। पिछले कुछ वर्षों में दुनिया भर में व्यापार और यात्रा का दायरा काफी बढ़ा है। इसके कारण कई हानिकारक कीट और रोग नई जगहों तक पहुंच गए हैं, जिससे खेती और पर्यावरण को नुकसान हो रहा है। वनस्पति जैव सुरक्षा का मतलब पौधों को कीटों और बीमारियों से बचाने के लिए सुरक्षा व्यवस्था तैयार करना है। इसमें फसलों की जांच, निगरानी, सफाई और समय पर कार्रवाई शामिल होती है। इसे पौधों की सीमा सुरक्षा भी कहा जा सकता है।

इस व्यवस्था से न केवल किसानों की फसल सुरक्षित रहती है, बल्कि खाद्य आपूर्ति और अंतरराष्ट्रीय व्यापार भी प्रभावित नहीं होता। साथ ही यह जैव विविधता और पर्यावरण को बचाने में भी मदद करती है। संयुक्त राष्ट्र और खाद्य एवं कृषि संगठन का कहना है कि पौधों की सुरक्षा केवल सरकारों की जिम्मेदारी नहीं है। आम लोगों को भी इस दिशा में जागरूक होना होगा। यात्रा के दौरान पौधों और बीजों को बिना जांच के एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने से बचना चाहिए। किसानों को भी सुरक्षित और टिकाऊ खेती के तरीकों को अपनाना चाहिए। विशेषज्ञों का मानना है कि यदि आज पौधों की सुरक्षा पर ध्यान दिया जाए तो भविष्य में भूख, गरीबी और पर्यावरण संकट जैसी बड़ी समस्याओं को कम किया जा सकता है। स्वस्थ पौधे ही स्वस्थ जीवन और सुरक्षित भविष्य की गारंटी हैं।

सुशासन का है यह दौर, जिसका ओर है ना छोर-मुख्यमंत्री डॉ. यादव

भोपाल मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि जैसी नीयत होती है, वैसी ही बरकत होती है। हमारा प्रदेश आज देश में सुशासन के जरिए लोक कल्याण का पर्याय बन चुका है। लोक कल्याण के अवसर सबको मिलते हैं, लेकिन जो हृदय की गहराईयों से लोगों के कल्याण की सोच रखते हैं, ईश्वर उसकी मदद करते हैं। हमारी सरकार लोक कल्याण के प्रति अपनी प्रतिबद्ध सोच, कर्मठता, समर्पण और नवाचारों के साथ आगे बढ़ रही है। आज प्रदेश के हर कोने में, हर छोर में सुशासन का दौर है। उन्होंने कहा कि हमने %विरासत से विकास% की परम्परा को कायम रखते हुए जनहित में अधिकाधिक नवाचार अपनाकर प्रदेश की तरक्की के नए रास्ते बनाये हैं। प्रदेश की जनता की सेवा, कल्याण और सबके जीवन में खुशहाली लाने में हम कोई कसर नहीं रखेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव बुधवार को प्रदेश के विभिन्न जिलों से आए विधायकों, जनप्रतिनिधियों एवं नागरिकों को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि %सच्चा वादा-पक्का काम% यही हमारी सरकार का मूलमंत्र है। प्रदेश में धार्मिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और वन पर्यटन बढ़ाने के लिए हम भरपूर प्रयास कर रहे हैं। पर्यटन बढ़ेगा तो प्रदेश में रोजगार बढ़ेंगे और इसका सीधा लाभ हमारे अपने नागरिकों को होगा। उन्होंने कहा कि सरकार द्वारा आयोग-निगम-मंडलों एवं विकास प्राधिकरणों में नियुक्तियों की प्रक्रिया जारी है। प्रदेश की जनता के कल्याण के लिए सभी श्रेष्ठ व्यक्तियों को अवसर दिया जाएगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव का प्रदेश के विभिन्न निगम-मंडल-बोर्ड एवं विकास प्राधिकरणों के नवनियुक्त अध्यक्ष एवं उपाध्यक्षों ने बुधवार को मुख्यमंत्री निवास पर हुए गरिमामय समारोह में अभिनंदन कर आभार जताया। अभिनंदन समारोह में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्री श्री चेतन्य कुमार काश्यप भी उपस्थित थे। समारोह में मुख्यमंत्री डॉ. यादव का मध्यप्रदेश राज्य वन विकास निगम लिमिटेड के नवनियुक्त अध्यक्ष श्री रामनिवास रावत, मध्यप्रदेश राज्य सहरिया विकास प्राधिकरण की नवनियुक्त अध्यक्षा श्रीमती गुड्डीबाई आदिवासी, मध्यप्रदेश राज्य नागरिक आपूर्ति निगम लिमिटेड के नवनियुक्त अध्यक्ष डॉ. कृष्णपाल सिंह यादव, निगम के उपाध्यक्ष श्री संजीव कांकर, रतलाम विकास प्राधिकरण के नवनियुक्त अध्यक्ष श्री मनोहर पोरवाल, प्राधिकरण के उपाध्यक्षद्वय श्री गोविंद काकाणी एवं श्री प्रवीण सोनी तथा मध्यप्रदेश राज्य मछुआ कल्याण बोर्ड के नवनियुक्त अध्यक्ष श्री महेश केवट एवं अन्य जनप्रतिनिधियों ने आत्मीय स्वागत एवं अभिनंदन करके उन्हें जनकल्याण का सेवा दायित्व देने के लिए आभार ज्ञापित किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव को जनप्रतिनिधियों द्वारा प्रतीक चिन्ह भी दिए गए।

अब देश में बड़े शहरों तक सीमित नहीं प्रदूषण- बढ़ते ओजोन से झुंझुनू में 299 पर पहुंचा एक्यूआई

झुंझुनू सरकारी आंकड़ों के विश्लेषण से पता चला है कि देश में झुंझुनू सबसे प्रदूषित शहर रहा। इस दौरान यहां वायु गुणवत्ता सूचकांक 299 दर्ज किया गया, जो 'खराब' श्रेणी में आता है। इससे पहले कल झुंझुनू में सूचकांक 273 दर्ज किया गया। मतलब की कल से वहां प्रदूषण में 26 अंकों का उछाल आया है। रुझानों में यह भी सामने आया है कि झुंझुनू की हवा में ओजोन पूरी तरह हावी है। देखा जाए तो वहां फिजाओं में घुला जहर इतना ज्यादा है कि वो लोगों को बेहद बीमार बना देने के लिए काफी है।

झुंझुनू में स्थिति किस कदर खराब है, इसी बात से समझा जा सकता है कि वहां प्रदूषण का स्तर विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा निर्धारित सुरक्षित सीमा से 390 फीसदी अधिक है। दूसरी तरफ देश में छपरा की हवा सबसे साफ है, जहां वायु गुणवत्ता सूचकांक महज 20 रिकॉर्ड किया गया। ऐसे में यदि देश के सबसे प्रदूषित शहर झुंझुनू की तुलना छपरा से करें तो वहां स्थिति 14.9 गुणा खराब है। वहीं कल चुरू में स्थिति सबसे ज्यादा खराब थी, जब एक्यूआई 302 दर्ज किया गया। वहीं आज सूचकांक घटकर 149 पर पहुंच गया है। मतलब कि पिछले 24 घंटों में वहां प्रदूषण में 153 अंकों का भारी सुधार हुआ है। राजधानी दिल्ली में कल से प्रदूषण में बढ़ोतरी हुई है। दिल्ली में जहां कल एक्यूआई 127 दर्ज किया गया था, जो आज बढ़कर 131 पर पहुंच गया। मतलब कि पिछले 24 घंटों में वहां सूचकांक में 4 अंकों का उछाल दर्ज किया गया। इसके साथ ही दिल्ली में वायु गुणवत्ता आज भी मध्यम श्रेणी में बनी हुई है। बता दें कि 2026 के दौरान दिल्ली में साल का सबसे साफ दिन 05 मई को दर्ज किया गया था, जब एक्यूआई 86 पर पहुंच गया। वहीं 20 मार्च और आठ अप्रैल 2026 को एक्यूआई 93 रिकॉर्ड किया गया था। दूसरी तरफ 18 जनवरी 2026 को दिल्ली में साल का सबसे प्रदूषित दिन दर्ज किया गया, जब एक्यूआई बढ़कर 440 तक पहुंच गया था। दिल्ली की तरह ही फरीदाबाद में भी कल से प्रदूषण में बढ़ोतरी हुई है। फरीदाबाद में जहां कल वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 136 दर्ज किया गया था, जो आज बढ़कर 149 पर पहुंच गया। हालांकि वहां आज भी वायु गुणवत्ता मध्यम श्रेणी में है। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा 11 मई 2026 को 240 शहरों के लिए जारी आंकड़ों के विश्लेषण से पता चला है कि इनमें से जहां करीब 15 फीसदी शहरों में हवा साफ है। वहीं 48.8 फीसदी में स्थिति संतोषजनक बनी हुई है, जबकि दूसरी तरफ 36.3 फीसदी शहरों में हालात चिंताजनक हैं। मतलब की देश के ज्यादातर शहरों में आज हवा संतोषजनक है। कल से देश में साफ हवा वाले शहरों की गिनती में 9.1 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है। दूसरी तरह संतोषजनक हवा वाले शहरों की गिनती में भी 5.6 फीसदी का कमी दर्ज की गई। मध्यम वायु गुणवत्ता वाले शहरों की बात करें तो इनकी संख्या में कल से करीब 15.5 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है। वहीं खराब हवा वाले शहरों की गिनती में कल से 16.7 फीसदी की कमी आई है, जोकि राहत की खबर है। आंकड़ों से पता चला है कि प्रदूषण के मामले में सवाई माधोपुर (281) दूसरे जबकि मेरठ (231) तीसरे स्थान पर है। इसी तरह दौसा चौथे स्थान पर है। भरतपुर-सहरसा में भी स्थिति कमोबेश ऐसी ही है, जो 201 और 198 अंकों के साथ पांचवें और छठे पायदान पर हैं।झालावाड़ (187) सातवें स्थान पर हैं। इसी तरह दस सबसे प्रदूषित शहरों में गाजियाबाद (186), महाड (185) और पानीपत (185) शामिल हैं। रुझानों में सामने आया है कि आज देश के दस सबसे प्रदूषित शहरों में राजस्थान के पांच शहर (झुंझुनू, सवाई माधोपुर, दौसा, भरतपुर, झालावाड़) शामिल हैं। विश्लेषण से यह भी पता चला है कि सहरसा, मुजफ्फरनगर, बर्नीहाट (असम), करनाल, नंदेसरी, किशनगंज, हनुमानगढ़, गुरुग्राम, राजकोट, चरखी दादरी, मंडीदीप, वातवा, खन्ना, धारूहेड़ा, हाजीपुर, जींद, कैथल, बहादुरगढ़, हापुड़, भिवाड़ी, पंचगांव, जालंधर आदि शहरों की हवा में प्रदूषण के महीन कण (पीएम2.5) हावी हैं।

प्रधानमंत्री ने हर व्यक्ति का हक सीधे उसके खाते में पहुँचाया

भोपाल मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रदेश में उद्योगों के लिए नई भूमि और उसका केनवास तैयार हो चुका है, अब हम उद्योगपतियों के साथ मिलकर योजनाओं और नीतियों के सहारे रंग भरने का काम कर रहे है। इसमें नवउद्यमिता के लिए पर्याप्त नए अवसर सृजित किये जा रहे हैं।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के संकल्प अनुसार देश की अर्थव्यवस्था सुदृढ़ हो रही है। दक्षिण के द्वार के नाम से प्रसिद्ध बुरहानपुर, प्रदेश के विकास का द्वार है।बुरहानपुर में उद्यम और परिश्रम के संस्कार हैं, जिले के लोगों के हुनर बहुमुखी हैं। कृषि से लेकर उद्योगों तक सभी क्षेत्रों में बुरहानपुर में गतिशीलता का वातावरण है। बुरहानपुर के विकास को नई दिशा देने के लिए राज्य सरकार प्रतिबद्ध है।सरकार बुरहानपुर की क्षमता और योग्यता को वैश्विक स्तर तक पहुंचाने के लिए स्थानीय उद्योग जगत के साथ परस्पर विश्वास, सहयोग और साझेदारी के साथआगे बढ़ेगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि बुरहानपुर के सुखपुरी को इंडस्ट्रियल बेल्ट के रूप में विकसित किया जाएगा, साथ ही औद्योगिक क्षेत्र रेहटा में नवीन मार्ग भी बनाया जाएगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव बुरहानपुर के श्री परमानंद गोविंदजी वाला ऑडिटोरियम परिसर में आयोजित उद्यमी संवाद को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। उन्होंने ऑडिटोरियम परिसर में उद्यमियों के उत्पादों का अवलोकन किया तथा उनसे संवाद भी किया। कार्यक्रम में जल संसाधन मंत्री श्री तुलसी सिलावट तथा बुरहानपुर विधायक एवं पूर्व मंत्री श्रीमती अर्चना चिटनीस विशेष रूप से उपस्थित थीं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि हमारी सरकार मध्यप्रदेश में औद्योगिक विकास को बढ़ावा देने के लिए 24×7 सक्रिय रूप से कार्य कर रही है। हमारा मुख्य लक्ष्य तेजी से उद्योगों की स्थापना कर स्थानीय युवाओं को रोजगार से जोड़ना है। इसी उद्देश्य से वर्ष 2025 उद्योग और रोजगार वर्ष के रूप में मनाया गया था। शासन द्वारा प्रदेश में उद्योगों के विकास के लिए हर स्तर पर कार्य किया जा रहा है। मंत्रि-परिषद द्वारा मंगलवार 05 मई, 2026 को ही प्रदेश में राज्य व्यापारी कल्याण बोर्ड और जिला स्तरीय समितियों के गठन को मंजूरी दी है।

आंतरिक विस्थापन का कहर- 8.2 करोड़ लोग अपने ही देश में बेघर, संघर्ष और हिंसा बनी बड़ी वजह

नई दिल्ली। कल्पना करें कि आप अपने घर में हैं, और अचानक बम गिरने लगते हैं। या फिर बाढ़ का पानी दरवाजे तक आ जाता है। आप जान बचाने के लिए भागते हैं, लेकिन किसी दूसरे देश में नहीं, बल्कि अपने ही देश की सड़कों पर। यही है %आंतरिक विस्थापन% यानी जब कोई इंसान अपनी ही सरजमीन पर बेघर हो जाता है। 2025 के अंत तक 104 देशों के 8 करोड़ 22 लाख लोग यानी जर्मनी की पूरी आबादी से भी ज्यादा लोगों को अपने ही देशों में विस्थापित होकर रहना पड़ा। सबसे ज्यादा चिंतानजक बात यह है कि इस पूरे साल (2025) के दौरान लोगों को प्राकृतिक आपदाओं के मुकाबले युद्ध और हिंसा के कारण ज्यादा बार आंतरिक विस्थापन करना पड़ा है।

इंटरनल डिस्प्लेसमेंट मॉनिटरिंग सेंटर (आईडीएमसी) और नॉर्वेजियन रिफ्यूजी काउंसिल (एनआरसी) की ताजा रिपोर्ट %ग्रिड 2026% दुनिया के सामने एक दिल दहलाने वाली तस्वीर रखती है। आईडीएमसी की नई निदेशक ट्रेसी लुकास ने अपने संदेश में साफ कहा,साल 2025 के अंत तक 8 करोड़ 20 लाख से अधिक लोग आंतरिक रूप से विस्थापित रहे, यह 2024 की तुलना में थोड़ी गिरावट जरूर है, लेकिन अब भी रिकॉर्ड ऊंचाई के करीब है। यह ध्यान देने लायक है कि पूरे साल के अंत तक इन 8 करोड़ 22 लाख में से 6 करोड़ 86 लाख लोग संघर्ष और हिंसा के कारण विस्थापित थे, जबकि 1 करोड़ 36 लाख लोग प्राकृतिक आपदाओं की वजह से विस्थापित हुए। पिछले एक दशक का आंकड़ा बताता है कि आंतरिक विस्थापन में यह गिरावट इस दशक में पहली बार आई है। 2016 में 3 करोड़ 89 लाख लोग विस्थापित थे। आज वह संख्या दोगुनी से भी ज्यादा है। इससे यह स्पष्ट होता है कि आंतरिक विस्थापन की यह गिरावट कोई सच्ची राहत नहीं है। रिपोर्ट खुद भी स्वीकार करती है कि यह आंशिक रूप से डेटा की कमी, असुरक्षित वापसी और अस्थायी समाधानों का नतीजा है। आईडीएमसी केवल विस्थापित लोगों की गिनती नहीं करता। वह %विस्थापन की घटनाएं% भी गिनता है। यानी एक ही इंसान को अगर साल में पांच बार भागना पड़ा, तो वह पांच गिना जाएगा। इस तरह 2025 में 146 देशों और क्षेत्रों में आंतरिक विस्थापन की घटनाएं 6 करोड़ 22 लाख बार घटीं। हालांकि, 2024 की तुलना में यह आंकड़ा छह फीसदी कम है लेकिन इसके भीतर दो बिल्कुल विपरीत रुझान छिपे हैं। संघर्ष और हिंसा से विस्थापन की घटनाएं 60 प्रतिशत बढ़कर 3 करोड़ 23 लाख रिकॉर्ड ऊंचाई तक पहुंची जबकि प्राकृतिक आपदाओं से विस्थापन की घटनाएं 35 प्रतिशत घटकर 2 करोड़ 99 लाख रहा, हालांकि यह भी दशकीय औसत से 13 फीसदी अधिक है। दक्षिण एशिया में 2025 संघर्ष विस्थापन का एक असाधारण साल रहा। 2024 की तुलना में 49 गुना वृद्धि दर्ज की गई । इसकी वजहसीमा पार लड़ाइयां थीं। अप्रैल के अंत में भारत-पाकिस्तान के बीच कश्मीर में हुए सशस्त्र हमले के बाद दोनों देशों के बीच तनाव चरम पर पहुंचा। नियंत्रण रेखा के पास लड़ाई ने भारत में 1 लाख 25 हजार और पाकिस्तान में करीब 8 हजार लोगों को विस्थापित किया। रिपोर्ट इसे 2019 के बाद की सबसे बड़ी सीमा पार घटना बताती है।

रिपोर्ट में अफगानिस्तान-पाकिस्तान के बीच सशस्त्र हमले को लेकर कहा गया, तोरखम सीमा पर मार्च में झड़प से पाकिस्तान में 15 हजार विस्थापन हुए। अक्टूबर में अफगानिस्तान के कंधार प्रांत में हवाई हमलों से 1 लाख 61 हजार लोग विस्थापित हुए।

वहीं, भारत में मणिपुर के भीतर हुए आंतरिक विस्थापन का जिक्र भी किया गया। मई 2023 में शुरू हुई मेइती-कुकी जो सांप्रदायिक हिंसा के ढाई साल बाद भी 78 हजार लोग मणिपुर में विस्थापित हैं। आईडीएमसी की एक टीम ने अक्टूबर 2025 में वहां का दौरा किया और पाया कि 52 हजार राहत शिविरों में और 26 हजार मेजबान परिवारों के साथ रह रहे हैं।

अगर कोई एक घटना 2025 की रिपोर्ट को परिभाषित करती है, तो वह है ईरान की राजधानी तेहरान की घेराबंदी। इजराइल ने 13 से 24 जून 2025 के बीच ईरान में सैन्य अभियान चलाया। इजराइली सेना के निकासी आदेशों और अमेरिका की चेतावनियों ने तेहरान की अधिकांश आबादी को कैस्पियन सागर तटीय प्रांतों की ओर भागने पर मजबूर कर दिया।

पूरे एक करोड़ विस्थापन एक ही देश में दर्ज हुए। रिपोर्ट कहती है, यह वार्षिक वैश्विक जोड़ का लगभग एक-तिहाई था और यह अब तक की सबसे बड़ी एकल संघर्ष विस्थापन घटना है जो आईडीएमसी ने इतने कम समय में दर्ज की है। लगभग 60 लाख लोग मजंदरान और 40 लाख गीलान प्रांत में शरण लेने पहुंचे। मस्जिदें और मेट्रो स्टेशन उन लोगों के लिए आश्रय बन गए जो राजधानी में ही रुक गए। 12-दिन के युद्ध के बाद माना गया कि सभी लोग वापस लौट आए। स्थिति रिपोर्ट के मुताबिक, फिलिस्तीन में साल 2025 के दौरान कुल 27 लाख 56 हजार बार लोगों को विस्थापित होना पड़ा। हालांकि, साल के अंत तक भी 20 लाख लोग विस्थापित जीवन जी रहे थे, जिनमें से 13 लाख को आपातकालीन आश्रय की जरूरत थी। गाजा में 19 जनवरी को युद्धविराम लागू हुआ, जिससे 6 लाख 42 हजार लोग उत्तरी हिस्सों की ओर लौटे, लेकिन घर बर्बाद हो चुके थे और सेवाएं नदारद थीं। मार्च में फिर शत्रुता शुरू हुई। अगस्त में गाजा में अकाल घोषित हुआ। अक्टूबर में एक और युद्धविराम हुआ, जिस दिन रोजाना के विस्थापन 1 लाख 82 हजार के चरम पर थे।पश्चिमी तट की स्थिति भी बिगड़ी। वहां विस्थापन 1967 के बाद सबसे अधिक रहे। जनिन, तुलकर्म और नूर शम्स के शरणार्थी शिविरों पर इजराइली सैन्य अभियान में 33 हजार फिलिस्तीनी, पूरी की पूरी आबादी, भागने पर मजबूर हुई।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक सोनल मेहता केलिए प्रतीक्षा ग्राफिक्स, 127 देवी अहिल्या मार्ग, इंदौर (म.प्र.) से मुद्रित एवं 209-बी शहनाई रेसीडेंसी-2 कनाड़िया रोड इंदौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक: डॉ. सोनल मेहता फोन : 0731-2595008 Mail.sonal12mehta@yahoo.co.in 9755040008